Sl.No. :

नामांक Roll No.

No. of Questions – 3

No. of Printed Pages – 7

SS–34–DL–T.W. (Hindi)(Supp.)

उच्च माध्यमिक पूरक परीक्षा, 2025

SENIOR SECONDARY SUPPLEMENTARY EXAMINATION, 2025

हिन्दी टंकण लिपि

(TYPEWRITING HINDI)

समय : 1 **घण्टा**

पूर्णांक : 40

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

1) परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें ।

2) प्रत्येक कागज के एक तरफ टंकण करें ।

3) प्रत्येक प्रश्न को नये पृष्ठ से आरम्भ करना है।

4) प्रत्येक लाइन के बीच में द्विगुणित अवकाश (Double Spacing) देकर टंकण करना है।

5) हर प्रश्न के लिए 20% अंक सजावट के निर्धारित है।

यहाँ से काटिए

प्रश्न पत्र को खोलने के लिए यहाँ फाड़ें

यहाँ से काटिए

1) निम्न अवतरण को टंकित कीजिए –

टंकित अंक – 16

सजावट – 04

कुल अंक – 20

मन का स्वरूप

जीवन में प्रतिक्षण कोई न कोई संयोग बनता रहता है। कोई मिलता है, बिछुड़ता है। बुरा या अच्छा लगता है । लोभ या ईर्ष्या पैदा होती है। राग–द्रेष का अनुभव होता है। ये सारे भाव ही तो मन के स्वरूप को प्रतिबिम्बित करते है। ये प्रतिबिम्ब, सही अर्थों में। मेरी परीक्षा का प्रश्न–पत्र है। इनके माध्यम से ही हम बदलाव का आकलन कर पाते है। मेरी साधना का प्रभाव जीवन में कितना हो पाया, मुझे पता चल जाता है। क्रोध–लोभ–वासना ईर्ष्या आदि भावों की क्रिया और प्रतिक्रिया मन में हो जाती है। मानो ईश्वर प्रतिदिन हमारी परीक्षा ले रहा हो। वह साक्षी बना हुआ है – आत्म भाव में उसकी उपस्थिति में ही जीव अपने कर्म करता है। इसीलिए कहते है कि हम जमाने से छिपकर रह सकते है, स्वयं से छिपकर नहीं रह सकते। कामना का स्वतः पैदा होना इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि हम अपनी मर्जी से पूर्णतः नहीं जी सकते। कामना पूर्तिया उसे नकार देने का निर्णय हमारा हो सकता है। इस निर्णय के पीछे भी वही ईश्वरीय शक्ति है, जो पिछले कर्मो के अनुरूप ही निर्णय कराएगी। प्रकृति के सत–रज–तम कामना पूर्ति के निर्णय को प्रभावित करते है। इस कारण कर्मों का फल हमारे हाथ में नहीं रहता। सही अर्थो में तो कर्म का कर्त्ता भी व्यक्ति नहीं होता । जब कामना तथा कामना पूर्ति का निर्णय दोनों ही व्यक्ति के हाथ में नहीं है, तब उसका कर्त्ता भाव तो पीछे छूट चुका होता है। फल उसके हाथ में होता ही नहीं है। कामना का केन्द्र मन है। मन चाहे तो कामना प्राण के साथ जुड़कर सृष्टि का निर्माण करता है।

किसी व्यक्ति को देखकर ही मन में क्रोध का भाव जागृत हुआ, तब उसका कारण उसका कोई कर्म तो नहीं है। प्रारब्ध का यही रूप है।

यहाँ जो व्यवहार है, वह शुद्ध प्रकृति दत्त है। प्रत्येक प्राणी में एक जैसा होता है। ईश्वर ने ही उसके मन में इच्छा पैदा की है कि वह यहां आए। त्रिगुणी बुद्धि के निर्णय से ही वह चलकर यहां पहुंचा है। उसने भी अभी तक अपने विवेक का उपयोग नहीं किया है। वह भी पशुभाव में है यदि हिंसक रूप का प्रदर्शन किया तो वह टूट पड़ेगा। दोनों के बीच भावनात्मक दूरी बढ़ जाएगी। जो थोड़ी भी श्रद्धा या विश्वास है, वह भी न्यूनतम हो जाएगा नए कर्मबन्ध भी पैदा होंगे। मौन ही रहो।

क्रोध अध्यात्म यात्रा का बड़ा शत्रु है। प्रेमपथ के यात्री को क्रोध विक्षिप्त कर ड़ालता है। क्योंकि प्रेम अहंकार शून्य स्थिति में संभव है। क्रोध अहंकार का पर्याय है। प्रेम हृदय में रहता है, अहंकार बुद्धि में। स्वभाव से दोनों ही विरो धाभासी है। प्रेम में व्यक्ति स्वयं को कभी नहीं देखता प्रेमी के आगे स्वयं लीन हो जाता है। प्रेम को रस या ब्रह्म कहा है। जब किसी को देखकर मन में क्रोध जागे या वासना का उदय हो, तब पहली प्रतिक्रिया हो कि ईश्वर ने परीक्षा लेने के लिए भेजा है। यही विवेक समय के साथ व्यक्ति को इन्द्रिय निग्रह में पारंगत करता है। भावनाओं को सात्विक बनाता है। मन के दर्पण में व्यक्ति अपने प्राप्तांक देखता जाता है और आगे बढ़ता जाता है। वह स्वयं झूठ नहीं बोल सकता। यही उसकी मजबूरी है। धर्म एवं समाज के नियमों में बंधा हुआ स्वयं अपनी अहंकृति एवं प्रकृति से भी संघर्ष करता रहता है। यही संघर्ष ही द्वन्द्व को बनाए भी रखता है। द्वैत भाव में उलझा रहता है। वह अपने कर्त्ता भाव को दृढ से दृढतर बनाता जाता है। कर्त्ता भाव का छूटना ही व्यक्ति के भीतर झांकने को प्रेरित करता हैं यही से मन–मन्दिर की ओर यात्रा शूरू होती है। कुछ तो स्वयं को ईश्वर अंश जीव अविनाशी मानकर भीतर उतरते है। आत्मा का आधा भाग ईश्वर है, आधा जीव। व्यक्ति का यह भाव मन के साथ–साथ सात करोड़ कोशिकाओं में व्याप्त हो जाता है। उन सबके भी मन है।

2) निम्नलिखित पत्र को यथोचित प्रारूप में टंकित कीजिए :

टंकण अंक : 08

सजावट : 02

कुल अंक : 10

शिव अभिमन्यु एण्ड संस

(पुस्तकों के विक्रेता)

पत्र सं. 25/01/115 15/ बी / 107

मो. सं. – 6666666666 यूनिक मार्ग

ई–मेल – ए बी एच आई @ जी मेल, कॉम आनन्द (गुजरात)

दिनांक : 10 जनवरी, 2025

सर्व श्री भोपालदास रविप्रकाश

कृष्ण पथ, सुमन वाटिका के पास

सिरसा (हरियाणा)

विषय : पुस्तक सूची एवं मूल्य सूची मंगवाने हेतु ।

प्रिय महोदय,

हमें यह लिखते हुए अति प्रसन्नता है कि गत दो वर्ष पूर्व हमने विश्वविद्यालय एवं प्रतियोगिताओं से संबंधित पुस्तकों एवं स्टेशनरी का व्यवसाय प्रारम्भ किया था जो प्रगति के पथपर अग्रसर है तथा प्रकाशन एवं वितरण कार्य में गुणवत्तता की विधमानता है। हमें यह ज्ञात हुआ है कि सिरसा शहर के प्रमुख पुस्तक विक्रेताओं में से एक ख्यात नाम फर्म हैं ।

आपके सद् व्यवहार को मध्यनजर रखते हुए हम आपसे व्यापारिक संबंध स्थापित करना चाहते है तथा आपकी फर्म द्वारा प्रकाशन एवं उत्कृष्टतापूर्ण कार्य व्यवहार से हम प्रभावित है। कृपया हमें आपके द्वारा विक्रय की जा रही विश्वविद्यालय एवं विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं की महत्वपूर्ण सूची (मूल्य सहित) भेजने का कष्ट करें। इसके साथ ही आपकी व्यापारिक शर्तों का विवरण भिजवाने का श्रम करावें।

इसे अति आवश्यक समझे।

सधन्यवाद

शिव अभिमन्यु एण्ड संस के लिए

सही –

(शिव)

3) निम्नलिखित सारणी को यथोचित रूप में टंकित कीजिए :

टंकण अंक : 08

सजावट : 02

कुल अंक : 10

परिवारों का मासिक व्यय मदानुसार विवरण

		परिवारों का मासिक व्यय (₹)			
क्रं.सं	व्यय मद	अ	ब	स	द
01	भोजन	600	500	550	700
02	कपड़े	200	300	275	350
03	गृह किराया	1000	2000	2500	1500
04	ईंधन	300	350	400	280
05	पेयजल	550	500	560	490
06	वाहन मरम्मत एवं अनुरक्षण	320	410	470	380
07	मनोरंजन	275	325	310	270

08	शिक्षा	480	510	615	605
09	चिकित्सा	290	370	410	430
10	विविध	190	210	270	255

DO NOT WRITE ANYTHING HERE